गणपति की सेवा | By Mukesh Kumar |

गणपति की सेवा मंगल मेवा
सेवा से सब विघ्न टारे
तीन लोक के सकल देवता
द्वार खड़े नित अर्ज़ी करें

जय गणपति जय गणपति
जय गणपति जय

रिद्धि सिद्धि दक्षिण बाम बिराजे
अरु आनंद सो चंवर धारे
धूप दीप और लिए आरती
भक्त खड़े जयकार करें

गुड़ के मोदक भोग लगत है
मूषक वाहन चढ़े फिरे
सौम्य रूप लख श्री गणपति को
विघ्न भागे जाए दूर परे

जय गणपति जय गणपति
जय गणपति जय

गणपति की सेवा मंगल मेवा
सेवा से सब विघ्न टारे
तीन लोक के सकल देवता
द्वार खड़े नित अर्ज़ी करें

भादों मास और शुक्ल चतुर्थी
दिन दुपहर भरपूर पड़े
लियो जनम गणपति प्रभु जी ने
पार्वती आनंद भरे

अद्भुत बाजे बजे इंद्र के
देव वधू मिल गान करें
श्री शंकर धर आनंद उपजो
नर नारी मन मोद भरे

जय गणपति जय गणपति
जय गणपति जय

गणपति की सेवा मंगल मेवा
सेवा से सब विघ्न टारे
तीन लोक के सकल देवता
द्वार खड़े नित अर्ज़ी करें

आन विधाता बैठे आसन
इंद्र अप्सरा नृत्य करें
देख रूप ब्रह्मा जी शिशु को
विघ्न विनाशक नाम धरे

एक दंत गजवंत विनायक
त्रिनयन रूप अनूप धरे
पर खंभा सा उदर पुष्ट है
देख चंद्रमा हास्य करे

जय गणपति जय गणपति
जय गणपति जय

गणपति की सेवा मंगल मेवा
सेवा से सब विघ्न टारे
तीन लोक के सकल देवता
द्वार खड़े नित अर्ज़ी करें

दियो श्राप श्री चंद्र देव को
कलहिन तत्काल करे
चौदह लोक में फिरे गणपति
तीन भुवन में राज करे

गणपति पूजन नित करने से
काम सभी निर्विघ्न सरे
पूजा कर जो गाए आरती
तातें श्री यश चक्र फिरे

जय गणपति जय गणपति
जय गणपति जय

गणपति की सेवा मंगल मेवा
सेवा से सब विघ्न टारे
तीन लोक के सकल देवता
द्वार खड़े नित अर्ज़ी करें

जो जन मंगल कार्य के पहले
श्री गणेश का ध्यान धरे
कारज उनके सकल सफल हो
मनोकामना पूर्ण करे

गणपति की सेवा मंगल मेवा
सेवा से सब विघ्न टारे
तीन लोक के सकल देवता
द्वार खड़े नित अर्ज़ी करें

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%97%e0%a4%a3%e0%a4%aa%e0%a4%a4%e0%a4%bf-%e0%a4%95%e0%a5%80-%e0%a4%b8%e0%a5%87%e0%a4%b5%e0%a4%be-by-mukesh-kumar/